स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड

वर्ष - २०१९

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ नांदेड के अंतर्गत हिंदी में आचार्य पदवी

प्राप्त करने हेतु पंजीयन के लिए प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रुपरेषा

विषय

श्री गुरु गोबिंदसिंघ जी का हिंदी साहित्य में योगदान

Eligibility No.Ph.D./HINDI/APR-2019/APR-19/24
Date of Registration : 12.04.2019
Date of Submission of Synopsis 08.10.2021

शोध छात्रा

कामठेकर अनिताकौर स. प्रितमसिंघ
खामगांव जिल्हा
(बुलढाणा)
email id : anitachavan825@gmail.com
Mob : 9921599804

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड
श्री शिवाजी कॉलेज परभणी

“गुरू गोबिंदसिंघजी का हिंदी साहित्य में योगदान”

अनुक्रमणिका :-

प्रथम अध्याय

१. सिख धर्म की स्थापना

२. सिख शब्द का अर्थ

३. सिख धर्म का उद्देश्य

४. गुरू की पृष्ठ भूमि

५. गुरू परंपरा

व्दितीय अध्याय

१. गुरू गोबिंदसिंघजी के समय की परिस्थितियाँ

अ) युगीन परिस्थितियाँ

१. राजनीतीक परिस्थति

२. सामाजिक परिस्थिति

३. सांस्कृतिक परिस्थिति

४. धार्मिक परिस्थिति

५. साहित्यीक परिस्थिति

आ) परिस्थितियों के संदर्भ में गुरूगोबिंदसिंघजी के विचार

१. नैतिक समृध्दि

२. समष्टिगत व्यक्ति

३. वैयक्तिक जीवन अनुभूति को महत्व

४. मानवतावादी जीवन दृष्टि

५. निवृत्ती परक प्रवृत्ति

६. सत्कर्मी

तृतीय अध्याय

गुरू गोबिंदसिंघजी का व्यक्तित्व और कृतित्व

अ) व्यक्तित्व

जन्मस्थान, परिवारिक संस्कार, बचपन, शिक्षा-दिक्षा, विवाह एवं पूत्रप्राप्ती, वीरयोध्दा, खालसा पंथ की स्थापना, दक्षिण की और प्रस्थान, नांदेड प्रवास, बंदाबहादुर से भेट, देहावसान.

ब) कृतित्व

रचनाएँ

रचनाओं का संक्षिप्त परिचय

जापु, अकाल-स्तुति, विचित्र नाटक, चण्डी चरित्र, उक्ति विलास, सबदहजारे, चौबीस आवतार, कवित्व और सवैया, पाख्यान चरित्र, ज्ञानप्रबोध, खालसा महिमा, जफरनामा, हिकायते।

चतुर्थ अध्याय

गुरू गोबिंदसिंघजी का हिंदी साहित्य में योगदान

१. सांस्कृतिक क्षेत्र में योगदान

२. शैक्षणिक क्षेत्र में योगदान

३. धार्मिक क्षेत्र में योगदान

४. दार्शनिक क्षेत्र में योगदान

५. सामाजिक क्षेत्र में योगदान

६. साहित्यिक क्षेत्र में योगदान

७. नारी चेतना और सामाजिक पुननिर्माण में योगदान

८. देशभक्ती और राष्ट्रियता के रक्षा के लिए परंपरागत कुर्बानीका योगदान

९. मातृभाषा, कलात्मक, भावनात्मक, शिक्षा में योगदान

१० . सैनिक शिक्षा के लिए साहित्य की देन/प्रेरणा

११. समर्पित अध्यापक और समर्पित शिष्य

१२. उद्योगिक व्यापारिक विकास में योगदान

पंचम अध्याय

गुरू गोविंदसिंघजी के काव्य की भाषा

१. भाषा

२. संस्कृत शब्दावली

३. प्राकृत अपभ्रंश शब्दावली

४. पंजाबी शब्दावली

५. अरबी फारसी शब्दावली

५. खडी बोली

२. बिम्ब विधान

३. छंद

४. रस

५. अलंकार

उपसंहार

सहाय्यक ग्रंथ सूची

पत्र-पत्रिकाएँ

गुरू गोबिंदसिंघजी का हिंदी साहित्य में योगदान

प्रस्तावणा :-

गुरू गोबिंदसिंघजी का अविर्भाव ऐसे समय में हुआ जबकि भारतीय संस्कृति तथा हिंदु धर्म पतनोन्मुख था। जनजीवन की भावनाओ का दमन हो रहा था। निरही तथा निस्सहाय हिंदु जनता मुगल धर्मान्धता तथा अत्याचारो का शिकार हो रही थी। मुगल सम्राट औरंगजेब की धार्मिक लिप्सा पुरे जोरो पर थी, समाज में कायरता, चरित्रहिनता, अडम्बरपुर्ण जीवन पध्दती का प्रचलन तथा अधर्म का बोलबाला था। क्रुर एवं सदाचारी शासकों के संकेतो पर साहित्य सृजन हो रहा था। ऐसे पतनशील वातावरण में जहां गुरू गोबिंदसिंघजी न मुगलो की धर्मान्धता तथा दमनशिलता के विरूध्द लडे वहा खालसा पंथ की सृजनता करके प्रजातंत्र तथा राष्ट्रिय एकता को भी प्रोत्साहीत किया। साथ ही महान साहित्य प्रेमी गुरू गोबिंदसिंघजी ने स्वयं तथा अपने संरक्षित कवियों से साहित्य सृजनता कराकर साहित्य जगत को बहुमुल्य निधियां भी दी। अपने पौराणिक ग्रंथो को जनभाषा में लिखवाया। और उन ग्रंथो के मुल विषयों में तदयुगीन परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करके उन्हे नए सिरे से सर्जित कराया। गुरूजी जनसाधरण को मानव तथा जाति संरक्षण संबंधी जागरूक करना चाहते थे।

इस लक्ष्य के लिए आपने जीवन-मुल्यों को घनीभुत करनेवाले संस्कार संपन्न धार्मिक ग्रंथो की रचना कराई। निःसंदेह गुरूजी को साहित्य के लिए यह अविस्मरणीय सर्वोत्तम देन है।

महान सहित्यकार वही होता है जो अपने समाज अथवा राष्ट्र को शाश्वत मृत्य प्रदान करता है। इस दृष्टि से गुरू गोबिंदसिंघजी हिंदी के महान साहित्यकार कहे जा सकते है। उन्होने हिंदी साहित्य की महान परंपरा में भक्ति और शक्ति के समन्वित सिध्दांत व्दारा एक नविन जीवनदर्शन को जन्म दिया।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा :-

शालेय जीवन से हि गुरू गोबिंदसिंघजी के प्रति रूची रही है। इसी कारण इस विषय की और अकृष्ट हुई ताकि मै इस अनुसंधान कार्ये के माध्यम से गुरू गोबिंदसिंघजी के हिंदी साहित्य में योगदान को उजागर करके इस महान कार्ये के प्रति समस्त मानव जाति को अवगत कराने का प्रयास कर रही हुं।

प्रस्तुत शोध का उध्देश्य :-

१) प्रास्ताविक शोध का उद्देश्य गुरू गोबिंदसिंघजी का हिंदी साहित्य में योगदान का अधयन करना ही मुल उद्देश्य रहा है।

२) गुरू गोबिंदसिंघजी के जीवन और उस समय की परिस्थितियों का चित्रण।

३) गुरू गोबिंदसिंघजी का साहित्य क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान पर प्रकाश डालना।

४) गुरू गोबिंदसिंघजी के देश और राष्ट्र तथा शिक्षा के क्षेत्र मं देन।

५) इस शोध के माध्यम से गुरू गोबिंदसिंघजी के कुर्बानी और साहित्य के प्रति प्रेम को उजागर करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का महत्व :-

श्री गुरू गोबिंदसिंघजी के शुभ कर्मो के प्रति अडिग आस्था, जुझारूपन बलिदान की निरन्तर भावनाये भारत में सदियो तक आगे आनेवाली सन्ततियो को बलवती प्रेरणा देती रहेगी।

'देह शिवा वर मोहे ऐसे, शुभ कर्तन ते कब हूँ न टरो।'
'न डरौ, अर सौ जब जाए लरो निश्चय कर अपनी जीत करो ।'

मैकालिक ने लिखा है-

गुरूजी प्रातः काल उठकर स्नान आदि कर और यमुना के किनारे चलते चलते जब देर एकान्त में पहूँच जाते तो वहाँ लगभग तीन घण्टों तक काव्य रचना करते रहते थे।

उन्होने साहित्य के मंदिर में भी अपने सुजन के फुल अर्पित किये, जिनका स्थायी महत्व है। संत सिपाही गुरू गोबिंदसिंघजी एक तरफ अकाल पुरख का जय गान करते थे। भक्ती रस से सराबोर साहित्य रचना के लिए जरूरी अभ्यास किया था। वे कवित्व कला में पारंगत थे। 'सरबलोह और तलवार' की पुजा भी उन्होने इस रूप में की है जैसे वह सजीव हो गयी है। उनके काव्य में भक्ति ज्ञान और वैराग्य की त्रिवेणी के दर्शन किये जा सकते है। साहित्य के क्षेत्र में भी उनके कर्मी का अतुलनिय योगदान है।

गुरू गोबिंदसिंघजी का हिंदी साहित्य में योगदान

प्रथम अध्याय : -

प्रथम अध्याय में सिख धर्म की स्थापना गुरू नानक देवजी ने की है। गुरू गोबिंदसिंघजी ने गुरू नानक देवजी के समय से चले आये सिख संप्रदाय को सिंह संप्रदाय में बदलकर उसे एक अदम्य वीर खालसा का रूप दे दिया। सिख धर्म में नित्य-नेम को अत्यंत महत्वपुर्ण माना जाता है। गुरू परंपरा में सभी सिख गुरूओ ने सेवा, सिमरण, अरदास, अर्पण, कुर्बानी को महत्व दिया है। सभी गुरूओंने बाणी को महत्वपुर्ण माना है। 'बाणी गुरू हे बाणी' ।

गुरू गोबिंदसिंघजी ने गुरू परंपरा की प्रथा बंद करके गुरू ग्रंथ सहिब को गुरू मानने के को कहा है। उन्होने सब सिख्खो को कहा - 'सब सिख्खन को हुकुम है गुरू मानिओ ग्रंथ।' गुरू ग्रंथ साहिब राष्ट्रिय एकता का प्रतिक है। सिख धर्म में गुरू पर्व और मेलो और नारी को भी सन्मानित दर्जा दिया तथा पाँच कंकार को भी महत्व दिया गया है।

व्दितीय अध्याय :-

व्दितीय अध्याय में गुरू गोबिंदसिंघजी के समय की परिस्थितियाँ बडी बिकट थी। देश राजनितीक, अर्थिक रूप से कंगाली व्याप्त था तथा सामाजिक स्तर जाँत-पाँत, उंच-नीच को लेकर वैर भाव जडजमा चुका था। सांस्कृतिक चेतना का दिनो-दिन ऱ्हास होता जा रहा था।

तृतीय अध्याय :-

तृतीय अध्याय में गुरू गोबिंदसिंघजी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे एक और महान योध्दा थे तो दुसरी और शांतीप्रिय इन्सान भी जो धर्म और देश की रक्षाथै पूरे परिवार को बलिदान कर सकता है। वे स्वयं एक आदर्श साहित्य दृष्टा रहे है। इनकी रचना के दशम गंथ में संग्रहित है। दुसरी और खालसा पंथ की स्थापना से उक्त पंथ को अदम्य उत्साही सिपाही का रूप प्रदान किया। संत-सिपाही जनित खालसा का उद्देश्य है-

'न दैन्य न पलायन'

चतुर्थ अध्याय :-

गुरू गोबिंदसिंघजी की विर काव्य सृजना का प्रधान कारण तत्कालीन युगीन रीतीकालीन जनसामान्य में विरत्व की भावना को संचारित करना था। रीतीकालीन के शांती और समृध्दी के समय लोग विलासिता में डुबे हुए थे। श्रृंगारिक काव्य की सृष्टि के उत्सुक अ थे। और यही सुनना ऐसा आपना ठाम मत समझ बैठे थे। फिर हिन्दु जनता पर हो रहे अत्याचारों तथा अनाचारो के कारण उनकी भावनाए दमित हो चुकी थी। ऐसे ही समय मे महान गुरू ने निरीह तथा दलित भारतीय जनता में राष्ट्र प्रेम की ज्वाला को प्रज्वलित करने के लिए तथा उनके मन से भय और कायरता को दूर करने के लिए वीर रस के साहित्य सृजन को उचित समझा। कलम और तलवार और शास्त्र एवं शस्त्र रूपो के धनी गुरू गोबिंदसिंघजी को व्यक्तीत्व जहा लोक मंगलकारी है वहा उनकी वाणी एवं साहित्य भी भारतीय आदर्शों के प्रति प्रेरणा का मुख्य स्त्रोत है।

रीतीकाल के अन्य कवि जहां सैध्दांतीक पक्ष से काव-रचना कर रहे थे वहां आपने काव्य के सिध्दांतो के प्रति अनाकर्षण दिखा कर इसके व्यवहारीक पक्ष को उभारा। वास्तव में गुरूजी की हिंदी साहित्य को देन अनुपम है। आपने वीर काव्य रचना की रूकी हुई गति को पुनः जीवन्त बनाया और पौराणिक एवं ऐतिहासीक पात्रों जैसे-चण्डी, दुर्गा, भवानी, राम, कृष्ण, नरसिंह, वामन आदि को तथा इनसे संबोधीत आख्यानों को लेकर वीर काव्य की सृजना की। उनके काव्य में अवतारो संबंधी वीर काव्य की सृजना गुरू काव्य में ही मौलिक नही समस्त हिंदी साहित्य जगत मे भी विलक्षण है।

हिंदी साहित्य में विर काव्य परंपरा के अधिकांश कवि मात्र कवि ही थे योध्दा नाही थे परंतु गुरू गोबिंदसिंघजी ने इस पक्ष से भी विलक्षण ठहरते है। आप जहा एक श्रेष्ठ काव्य रचियता थे। वहा उच्च कोटी के कवियों के संरक्षक तथा वीर-योध्दा भी थे। इसी संदर्भ में गुरूजी विष्णु के चौबीस अवतारों का जिस ढंग से उल्लेख किया है, वह संपूर्ण हिंदी साहित्य जगत में अनुठा है।

गुरू गोबिंदसिंघजी ने तत्कालीन काव्य भाषा ब्रज को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। आपने पंजाबी (चण्डी दी वार) तथा फारसी (जफरनामा तथा हिकायते) भाषाओं में भी काव्य-रचना की, परंतु आपकी रूचि वस्तुतः ब्रज भाषा की काव्य-सृजन में अधिक रमी और इस भाषा को आपने भावानुकुल आपना कर हिंदी साहित्य में योगदान दिया।

पंचम अध्याय : -

पंचम अध्याय में गुरूजी की काव्य भाषा में भी उनके वीर भावना से सशक्त और दृढ बनाया है। उनकी भाषा ने उनके भावों का वहन किया। परिभाषित व परिष्कृत ब्रज भाषा का ज्ञान, फारसी, अरबी, उर्दू के परंपरा का पूर्व ज्ञान पंजाबी भाषा के प्रभाव ने उनके वीरत्व को जन-जन में पहुँचाया। युध्द के गतिमय और ध्वनिपुर्ण दृष्यों के अनुकुल संवाद बिंब सामने लाकर उपमा, रूपक, उत्पेक्षा उदाहरण आदि अलंकारो के रूप में प्रस्तुत किया है।

गुरू गोबिंदसिघजी का साहित्य इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने भारतीय साधना और चिंतन परंपरा में प्रगतिगामी तत्वो को पहचाना और उन्हें पुनः प्रस्थापित करने का प्रयास किया।

वीरत्व के अवहान व्दारा गुरूजीने आधुनिक मानव में शक्ति और भक्ति का संचार किया। समग्रतः यह कहा जा सकता है कि गुरू गोबिंदसिंघजी ने संत सिपाही का रूप धारण कर मन, वचन और कर्म के धर्म और संत की रक्षा के लिए जाती और राष्ट्र के कल्याण के लिए सामाजिक विसंगतियों का निर्मुलन कर एक नई चेतना जागृत की।

उपसंहार :-

श्री गुरू गोबिंदसिंघजी का सारा संघर्ष मानवता की रक्षा के लिए था। आपने दबे कुचले लोगो को एकत्र कर खालसा पंथ का सृजन कर ऐसी अदम्य शक्तिशाली सेना तैयार की जिसने आपने समय की सबसे बडी सैनिक शक्ति को परास्त किया।

चिडियों से मै बाज लडाऊँ और सवा लाख से एक लडाऊँ का घोष करके गुरूजी ने जनता की उस सोई शक्ति को जगा दिया जो अपने सम्मान और अधिकार की रक्षा के लिए बडी से बडी ताकत से भिडने मे समर्थ है। गुरूजी व्दारा सृजित खालसा पंथ जात-पात, उंच-निच आदि समस्त भेदभावों से मुक्त और सभी प्रणियों को एक ही ईश्वर की संतान मानने वाला है।

गुरू गोबिंदसिंघजी का संदेश स्पष्ट है की सभी मनुष्य समान है और सामाजिक-राजनितीक व्यवस्थाओं में उनकी भागीदारी बराबर है।

गुरू गोबिंदसिंघजी ने मनुष्य को आदर्श आचरण धारण करने के लिए प्रतिबध्द किया। गुरूजी व्दारा पांच कंकार उच्च एवं आदर्श जीवन के प्रतीक है। केश श्रेष्ठ चिंतन कृपान शक्ति कछहरा सदाचार कड संयम और कंघा स्वच्छता एवं निर्मलता का प्रतीक है।

महान कवि एवं भाषाविद होना गुरू गोबिंदसिंघजी के व्यक्तित्व के भावुक एवं संवेदनशील पक्ष को उजागर करता है। अकाल उसतति जापु सहिब जफरनामा जैसी पावन बाणियों के रचनाहार श्री गुरू गोबिंदसिंघजी कवियों एवं विव्दानो का बहुत सन्मान करते थे। गुरू जी के विद्या-दरबार में ५२ कवियों समेत कई विव्दान थे जो निरंतर श्रेष्ठ साहित्य-सृजन एवं प्राचीन ग्रंथो के अनुवाद कार्ये में लगे रहते थे। यही नही गुरू गोबिंदसिंघजी ने संस्कृत, अरबी, फारसी, ब्रज, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं में पारंगत थे।

गुरू गोबिंदसिंघजी का अभिप्राय था कि संवेदनशील मनुष्य की उत्पति ज्ञानार्जन एवं श्रेष्ठ साहित्य व्दारा हि संभव है।

गुरू गोबिंदसिंघजी ने सिध्द कर दिया कि सत्य और मानवता की रक्षा के लिए यदि मनुष्य को सर्वस्व भी बलिदान करना पडे तो तो पीछे नही हटना चहिए।

संक्षेप : कहा जा सकता है कि गुरू गोबिंदसिंघजी व्दारा रचित अत्यंत समृध्द, संपन्न एवं उत्कृष्ट काव्य हिंदी साहित्य जगत की अमुल्य निधि है तथा हमारी सांस्कृतिक परंपराओ को पुनजीवित करने में पौराणिक तथा ऐतिहासिक तथ्थो को प्रामाणिक सिध्द करने में हिंदी साहित्य के काव्य रूपो, छंद, पध्दतियो एवं सम्प्रेषणीय शैलियो को विकसीत करने के लिए जो योगदान दिया वह महत्वपुर्ण है।

■■■